Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Anand Masih[1]* Bhaskar Dewangan[2]

[1] B.Sc., M.A., M.Ed., Government Girls Primary School, Shaheed Memorial, Raipur

***सार* – शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरुप बालक के व्यवहार को परिमार्जित करना है। व्यवहार के विभिन्न अवयवों में अभिवृत्तियाँ अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा, यह बहुत कुछ उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी अभिवृत्तियों के अनुसार ढलता है। जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतो तथा रुचि आदि को ग्रहण करता है वह सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होती है।**

अभिवृत्ति व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होती है। अभिवृत्ति से आशय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह किन्ही वस्तुओं, व्यक्तियों या परिस्थितियों के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

अगर किसी व्यक्ति की किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा और उसे पाने के लिये प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक अभिवृत्ति हुई तो वह उससे दूर भागेगा यहाँ तक कि उसके नाम से ही चिढ़ने लगेगा। अभिवृत्ति का निर्माण विचारों क्रियाओं तथा प्रभावों द्वारा होता है। अतः व्यक्ति जो भी वस्तु के बारे में सोचता है, अनुभव करता है और अपनी जिस रुप में प्रतिक्रिया व्यक्त करता है यह सब उसकी उस वस्तु के प्रति अभिवृत्ति को ही व्यक्त करता है।

कोई भी अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती वातावरण में उपलब्ध अनुभवों के द्वारा अर्जित की जाती है। इनका उम्र और अनुभव के साथ शनैः शनैः विकास होता है। सभी बालकों में किसी एक निश्चित आयु अथवा विकास अवस्था में किसी एक प्रकार की अभिवृत्तियाँ उसके अपने व्यक्तित्व और वातावरण की संयुक्त अंतःक्रिया का परिणाम होती है।

अभिवृत्तियों के विकास में शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण भूमिका होता है। अभिवृत्तियों के निर्माण की प्रारंभिक प्रक्रिया घर और परिवार से ही शुरु होती है। बालक में अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है। बालक अपने माता - पिता, बड़े भाई - बहन अथवा परिवार के अन्य सदस्यों से उनकी अभिव्यक्तियों को ज्यों की त्यों ग्रहण करता है। विभिन्न विचारों या वस्तुओ के प्रति विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करनी है वह परिवार में रहकर सीखता है इस तरह उसमें विभिन्न अभिवृत्तियों को अपनाने का प्रथम श्रेय घर, परिवार को जाता है।

जैसे - जैसे बालक बड़ा होता है उसका सामाजिक दायरा फैलता जाता है सामाजिक सम्पर्क द्वारा उसकी पूर्व निर्मित अभिवृत्तियों में परिवर्तन और नई अभिवृत्तियों को पनपने की प्रक्रिया तेजी से प्रारंभ हो जाती है।

विद्यालय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, विद्यालय में उसकी अभिवृत्तियों के निर्माण अथवा विकास पर शिक्षकों तथा साथी विद्यार्थियों के व्यवहार, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों तथा स्कूल की अन्य गतिविधियों का गहरा प्रभाव पड़ता है।

एक शिक्षक को अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास से अच्छी तरह परिचित होना चाहिये। शिक्षकों के सकारात्मक

अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। जिन शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति विचार व्यवहार अच्छा रहेगा तथा जो शिक्षक अपना शिक्षकीय कार्य निष्ठा, ईमानदारी व समर्पण के साथ करते है, उनके इस अभिवृत्ति का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है तथा वे भी विशिष्ट भावना से प्रेरित होकर मन लगाकर पढ़ाई लिखाई का कार्य करते है और अपनी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करते है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षक का व्यवहार, विचार तथा क्रियाये विद्यार्थियो के लिये उद्दीपक का कार्य करती है, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को एक दिशा प्रदान करती है।

अध्ययन की आवश्कता

प्रायः विद्यार्थी शिक्षक को अपना आदर्श मानते है, वे शिक्षक के विभिन्न गतिविधियों को देखते व परखते है, तथा उस अनुरुप आचरण करते है। शिक्षक के व्यवहार, विचार और कार्य प्रणाली का विद्यार्थियों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

शासकीय शिक्षक प्रायः अपने गृह मुख्यालय से दूर पदस्थ होकर शिक्षकीय कार्य करते है इसके अलावा गैर शिक्षकीय कार्य जैसे - चुनाव, जनगणना, ग्राम सर्वे आदि कार्य भी शासकीय शिक्षक द्वारा समय - समय पर किया जाता है जिसका विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

अशासकीय शिक्षक प्रायः गृह मुख्यालय के आस पास पदस्थ होते है और वे किसी भी प्रकार का गैर शिक्षकीय कार्य न करके केवल शिक्षकीय कार्य ही करते है परन्तु इनकी सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि वे अल्प वेतन में कार्य करते है। जीविकोपार्जन हेतु अतिरिक्त आय के लिये वे निजी ट्यूशन या अन्य कार्य करते है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। उपरोक्त सभी परिस्थितियों का शासकीय व अशासकीय शिक्षकों की अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

अतः शासकीय व अशासकीय शिक्षको की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना आवश्यक समझा गया।

इस लघु शोध के मूल में इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने की आवश्यकता है कि क्या रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षको की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है ?

प्रस्तुत लघु शोध का संबंध शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि से है -

1. इस अध्ययन से शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का पता चलेगा।
2. इस अध्ययन से शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के विचार व्यवहारो व क्रियाओं का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता चलेगा।
3. इस अध्ययन से शिक्षको की शैक्षिक व व्यावसायिक व्यवहार का पता चलेगा।
4. प्रस्तावित अध्ययन से शिक्षक छात्र संबंधो का स्तर पता चल पायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त पदो की कार्यात्मक परिभाषा

अभिवृत्तिः-

अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियाँ है जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिये प्रेरित करती है।

शैक्षिक उपलब्धिः-

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य कक्षा में विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान, दक्षता या कुशलता से है। शैक्षिक उपलब्धि एक मनोवैज्ञानिक संरचना है। जो किसी व्यक्ति द्वारा निर्देशों और अनुभवों के प्रशिक्षणों के सहारे अर्जित की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य किसी अनुसंधान क्रिया के परिणाम के सूचक होते है जो निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिये निश्चित किये जाते है।

अध्ययनकर्ता जब समस्या से संबंधित क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करता है। तो उसे अध्ययन के अनुरुप अपने कार्य की दिशा तय करनी होती है। शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है -

www.ignited.in

1. रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षको की अभिवृत्ति को ज्ञात करना।

2. रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

समस्या से संबंधित आवश्यक तथ्यों एवं चरों के स्पष्ट ज्ञान पर आधारित पूर्वानुमान अध्ययन की परिकल्पना के रुप में निर्दिष्ट किये जाते हैं। समस्या से संबंधित पूर्व अनुसंधान सैध्दांतिक ज्ञान तथा अन्य सामान्य ज्ञान समस्या के संबंध में प्राप्त होने वाली उपयोगी परिणामों का पूर्वानुमान लगाने और परिकल्पना की रचना करने में सहायक होते है। परिकल्पना का अर्थ समस्या कथन का संभावित उत्तर है।

“एक ऐसा कथन जो समस्या के समाधान की प्रस्तावित अवधारणा होती है। शोधकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है।”

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पानाये निम्नलिखित है -

रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।

न्यादर्शः-

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य के अनुसार इस समस्या के अध्ययन के लिये रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत 20 - 20 यानि कुल 40 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयन किया जायेगा। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि (Random Method) से किया जायेगा। समस्या का अध्ययन करने के लिये इन्ही शिक्षकों के कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों को लिया जायेगा।

अध्ययन विधि

किसी भी शोध में अध्ययन विधि का अपना महत्व है। विभिन्न विषयों की समस्याओं के समाधान के लिये अलग - अलग विधियों को अपनाया जाता है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा।

उपकरण

प्रदत्त संकलन हेतु शोध उपकरण के रुप में उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1:-

“रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।”

उपर्युक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु शोधकर्ता द्वारा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांक का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान निम्न लिखित सारणी अनुसार है -

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांको का मान

सारणी क्र. 4.1

क्र.	समूह	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन $S.D.$	क्रांतिक अनुपात $C.R.$	सार्थक परिणाम
1.	शासकीय शिक्षक	20	179.65	10.90	1.02	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
2.	अशासकीय शिक्षक	20	183.45	12.57		

उपर्युक्त सारणी में शासकीय शिक्षकों का मध्यमान 179.65 एवं प्रमाणिक विचलन 10.90 तथा अशासकीय शिक्षकों का मध्यमान 183.45 एवं प्रमाणिक विचलन 12.57 है दोनांनों समूहों के बीच सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिये क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 1.02 है।

अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

व्याख्याः-

df 38 पर *t* तालिका के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.02 है। प्रदत्तों के आंकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.02 है जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हेतु आवश्यक मान से कम है अतः परिकल्पना स्वीकृत नहीं की जा सकती है तथा शासकीय

शिक्षकों और अशासकीय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्र. 01 में 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाये जाने के कारण परिकल्पना अस्वीकृत की गई है।

परिकल्पना के अनुसार रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जावेगा लेकिन दोनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात समान अभिवृत्ति पाई गई।

इनके संभावित कारण निम्न है -

शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को शासन द्वारा डाइट व *SCERT* के माध्यम से समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है।

ग्रीष्मावकाश में विकासखण्ड व संकुल स्तर पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को नवाचार व अभिवृत्ति विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है।

अशासकीय विद्यालयों के शिक्षको को भी समय - समय पर विभिन्न छळव् तथा शैक्षिक संस्थाओं द्वारा नवाचार व अभिवृत्ति विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है।

शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक शिक्षण कार्य व शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच रखते हैं।

परिकल्पना क्रमांक 2:-

"रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।"

उपर्युक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु शोधकर्ता द्वारा इन्ही शिक्षकों के कक्षाओ में अध्ययनरत विद्यार्थियों के ग्रेड (A,B,C,D) को शैक्षिक उपलब्धि के रुप में लिया गया है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के रुप में प्राप्त ग्रेड A का विवरण

सारणी क्र. 4.2

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	*A* ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों की संख्या	पतिशत	सार्थक परिणाम
1.	शासकीय	600	123	20.50%	अशासकीय विद्यालयों का परिणाम शासकीय विद्यालय से 12.66% अधिक पाया गया
2.	अशासकीय	600	199	33.16%	

व्याख्या:-

शासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों में से 123 को 'A' ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत में 20.50% है जबकि अशासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों में 199 को 'A' ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत का 33.16% है। अतः स्पष्ट है कि 'A' ग्रेड पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या अशासकीय विद्यालय में अधिक है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के रुप में प्राप्त ग्रेड 'B' का विवरण:-

सारणी क्र. 4.3

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	*B* ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों की संख्या	पतिशत	सार्थक परिणाम
1.	शासकीय	600	164	27.33%	अशासकीय विद्यार्थियों का परिणाम शासकीय विद्यर्थियों से 2% अधिक पाया गया
2.	अशासकीय	600	186	29.33%	

व्याख्या:-

शासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियो में से 164 को 'B' ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत में 27.33% है जबकि अशासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों में 186 को 'B' ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत का 29.33% है। अतः स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में 'B' ग्रेड पाने वालो की संख्या अधिक है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के रुप में प्राप्त ग्रेड ‘C’ का विवरण:-

सारणी क्र. 4.4

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	*C* ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत	सार्थक परिणाम
1.	शासकीय	600	256	42.66%	शासकीय विद्यालयों का *C* ग्रेड अशासकीय विद्यार्थियों से 13.33% अधिक पाया गया
2.	अशासकीय	600	176	29.33%	

व्याख्या:-

शासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियो में से 256 को ‘C’ ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत में 42.66% है जबकि अशासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों में 176 को ‘C’ ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत का 29.33% है। अतः स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में ‘C’ ग्रेड पाने वालो की संख्या अधिक है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के रुप में प्राप्त ग्रेड ‘D’ का विवरण:-

सारणी क्र. 4.4

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	*D* ग्रेड प्राप्त विद्यार्थियों की संख्या	पतिशत	सार्थक परिणाम
1.	शासकीय	600	57	9.5%	शासकीय विद्यालयों का *D* ग्रेड अशासकीय विद्यार्थियों से 3% अधिक पाया गया
2.	अशासकीय	600	39	6.5%	

व्याख्या:-

शासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियो में से 57 को ‘D’ ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत में 9.5% है जबकि अशासकीय विद्यालयों के कुल 600 विद्यार्थियों में 39 को ‘D’ ग्रेड प्राप्त हुआ जो कुल प्रतिशत का 6.5% है। अतः स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में ‘D’ ग्रेड पाने वालो की संख्या अधिक है।

परिकल्पना क्रमांक 2 के अनुसार जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से कम पाया गया।

अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का A व B ग्रेड जो कि उच्च प्राप्तांको का ग्रेड है, शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालयों के विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

ग्रेड का विवरण

प्राप्तांको का प्रतिशत	ग्रेड
81 से 100	*A*
66 से 80	*B*
51 से 65	*C*
36 से 50	*D*
36 से नीचे	*E*

निष्कर्ष

परिकल्पना क्रमांक 1:-

“रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।”

सारणी क्रमांक 4.1 के अनुसार शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में *38df* पर क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.02 है। प्रदत्तों के आंकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.02 है जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हेतु आवश्यक मान से कम है। अतः दोनों समूहों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक 2:-

“रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।”

परिकल्पना क्रमांक 2 के अनुसार रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया है।

अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को प्राप्त A व B ग्रेड जो कि उच्च प्राप्तांको का ग्रेड है, शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया। तथा शासकीय विद्यालयों

के विद्यार्थियों के C व D ग्रेड जो कि निम्न प्राप्तांकों का ग्रेड है, अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालयों के विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक 1 के अनुसार रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि इन्हीं विद्यालय में अध्ययनरत शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया है। इस अंतर के निम्न कारण हो सकते हैं -

1. शासकीय विद्यालयों में स्लम व गरीब वर्ग के बच्चे पढ़ते हैं जिनके माता - पिता स्वयं अनपढ़ या कम पढ़े लिखे होते हैं जबकि अशासकीय विद्यालयों में सम्पन्न घर के बच्चे पढ़ते हैं जिनके माता पिता भी पढ़े लिखे होते हैं।

2. शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व अभिरुचि कम होती है जबकि अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के अभिभावकों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति व अभिरुचि होती है।

3. शासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों का सारा भार (जैसे - पुस्तके, गणवेश, बस्ता, भोजन, छात्रवृत्ति) शासन स्वयं वहन करती है जिसका मूल्य बच्चे व अभिभावक नहीं समझते जबकि अशासकीय विद्यालयों में अभिभावक मोटी रकम देकर अपने बच्चों को पढ़ाते हैं इसलिये उन पर विशेष ध्यान देते हैं।

4. शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में कमजोर होती है जिसका प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

5. शासकीय विद्यालयों में सहायक शिक्षण सामग्री व आवश्यक संसाधनों का अभाव होता है।

6. शासकीय विद्यालयों में परम्परागत तरीके से शिक्षण होता है जबकि अशासकीय विद्यालयों में स्मार्ट बोर्ड तथा दृश्य, श्रव्य, मल्टी मीडिया का प्रयोग किया जाता है।

7. अशासकीय विद्यालयों के अभिभावक अपने बच्चों को पृथक से निजी ट्यूशन भेजते है।

8. शासकीय विद्यालयों के शिक्षक शिक्षाकर्मी के रुप में समय पर वेतन व अन्य सुविधाये नहीं मिलने के कारण क्षुब्ध व उपेक्षित हैं।

9. शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति के कारण पार्ट टाइम जॉब या अन्य घरेलू कार्य करने पड़ते हैं।

10. शिक्षकों की संख्या में कमी तथा शिक्षकों द्वारा गैर शिक्षकीय कार्य, लिपिकीय कार्य व अन्य कार्य कराने से शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।

अतः स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर न होने के बावजूद उपरोक्त संभावित कारणों के प्रभाव से रायपुर जिले के कक्षा 5वीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा अनुसंधान से यह अपेक्षा की जाती है कि लघु शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष का शैक्षिक उपयोग कैसे किया जाय ताकि शोधकर्ता के प्राप्त निष्कर्ष द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सुधार व विकास हो सके। प्रस्तुत लघु शोध में समस्या के आधार पर जो परिकल्पनाये निर्मित की गई उनसे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न शैक्षिक उपयोगिता हो सकती है -

1. शिक्षकों को समय - समय में नवाचार व कौशल विकास हेतु दिया गया प्रशिक्षण शिक्षकों के अभिवृत्ति में विकास करता है। अतः प्रस्तुत शोध नवाचार व कौशल विकास में उपयोगी है।

2. शिक्षकों के अभिवृत्ति व व्यावसायिक अभिरुचि का पता लगाकर जिन शिक्षकों की अभिवृत्ति कम हो उनके अभिवृत्ति विकास की योजना बनाने में उपयोगी।

3. यह अध्ययन शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के विचार व्यवहारों व क्रियाओं का

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के लिये उपयोगी है।

4. इस अध्ययन से शिक्षकों की शैक्षिक व व्यावसायिक व्यवहार का पता चलेगा।

5. प्रस्तावित अध्ययन से शिक्षक छात्र संबंधो को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अस्थाना बिपिन - शिक्षा में आकलन, मापन और मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

भार्गव महेश - आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, भार्गव हाउस, आगरा

गुप्ता एस. पी. - उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

कपिल एच. के. - अनुसंधान विधियां, एच. के. भार्गव प्रकाशन, आगरा

मंगल एस. के. - शिक्षा मनोविज्ञान, PHI Learning Private Ltd., New Delhi, पृष्ठ क्रमांक 392 - 393

शर्मा आर. के. - शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

सिंघल महेश - भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या

संदर्भ शोध ग्रंथ

Anil, V. Bamagond & Hiralli B.D. (2011) – “A Study of professional attitude of women teachers on the basis of their qualification and marital status” Edusearch (vol. 6)

Dass, S. (1986) - “Peer influence and education aspiration of secondary school students, a study in relating to their academic achievement.” Fourth servey of research in education (vol.1) M.B.Buch.

Golwalkar, S.(1986) – “A Study of scientific Attitude creativity and achievement of tribal students of Rajasthan.” Fourth servey of research in education (vol.1) M.B. Buch.

Kumar, Suhas and Patil Rupram (2011) - “teaching attitude of trainee teachers of teacher training college.” edusearch (vol. 2)

Lall, R. (1984) – “Child rearing Attitude, personal problems and personality factors as correlate of academic achievement ” Fourth servey of research in education (vol.1) M.B. Buch.

Mary Sahaya R. & Samuel Manorama (2010) “Relationship between attitude of the B.Ed. students teachers towards teaching and academic achievement.”

Sarah, Shanta Kumari, Williams (1993) – “A Study of the attitude of High School pupils towards general science and its relationship with achievement in the subject.” Fourth servey of research in education (vol.1) M.B. Buch.

Trivedi, V. (1987) – “A Study of the relationship of parental attitude, socio-economic background and feeling of security among the intermediate students and their academic achievement.” Fourth servey of research in education (vol.1) M.B. Buch.

चैबे, के. पी. (1995) – “बी.टी.सी. प्रमाण पत्र हेतु चयनित महिला एवं पुरूष प्रशिक्षार्थियों की जनसंख्या शिक्षा संबंधी अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन” एम. एड. लघुशोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर.

देवांगन, सरिता (2015) – “विज्ञान प्रयोगशालाओं के उपयोग की वर्तमान स्थिति का विद्यार्थियों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन” एम. एड. लघुशोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर.

दुबे, प्रेरणा (2013) – “महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की तुलना करना” एडूसर्च (Vol. 4)

कुजूर एलिजाबेथ रीता - ”कम्प्यूटर शिक्षा का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन” Souvenir

पट्टलवार, सुहासिनी (2010) – “बी. एड. एवं डी. एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन” एम. एड. लघुशोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर.

शर्मा, वंदना (2008) – “उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन” एम.

www.ignited.in

एड. लघुशोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर.

वर्मा, शालिनी 2013 – “बदलते परिवेश में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्म विश्वास का प्रभाव” एडूसर्च (Vol. 4)

Corresponding Author

Anand Masih*

B.Sc., M.A., M.Ed., Government Girls Primary School, Shaheed Memorial, Raipur